International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 1, Issue- 6 | November - December 2024
ISSN: 3048-9490

महादेवी वर्मा का नारीवाद: स्त्री अस्मिता और स्वतंत्रता की तलाश

सोनम सिंह
शोधार्थी, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की प्रमुख हस्तियों में से एक हैं, जिन्हें "छायावाद युग की महादेवी" के रूप में जाना जाता है। उनका साहित्यिक योगदान केवल काव्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने गद्य, निबंध, आत्मकथात्मक लेखन और पत्र साहित्य के माध्यम से भी अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया। महादेवी वर्मा का साहित्य उनके गहन मानवीय दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और समाज के प्रति जागरूकता का परिचायक है। वे न केवल एक कवयित्री थीं, बल्कि एक विचारक, शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता भी थीं, जिन्होंने भारतीय समाज में नारी के स्थान और उसकी स्वतंत्रता के प्रश्नों को गहराई से उठाया।

महादेवी वर्मा का नारीवाद उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से उभर कर आता है। उनका नारीवादी दृष्टिकोण पश्चिमी नारीवाद की नकल मात्र नहीं है, बल्कि यह भारतीय संदर्भ में स्त्री की अस्मिता और उसकी स्वतंत्रता की खोज पर आधारित है। उन्होंने स्त्री के भीतर छिपी अदम्य शक्ति और उसकी पहचान को समाज के सामने लाने का प्रयास किया। महादेवी ने नारी को केवल गृहलक्ष्मी या त्यागमूर्ति के पारंपरिक रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे एक आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी और स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया।

महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्री के आत्मसंघर्ष, सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह और स्वतंत्रता की आकांक्षा को गहराई से अभिव्यक्त किया गया है। उनकी रचनाएं स्त्री के भीतर आत्मचेतना और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करने का माध्यम बनीं। उन्होंने स्त्री की समस्याओं को केवल भावनात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखा, बल्कि उसे व्यावहारिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी समझा। उनकी रचनाओं में शिक्षा, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता को स्त्री स्वतंत्रता के मूलभूत पहलुओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी की पहचान और उसकी स्वतंत्रता की दिशा में नए आयाम स्थापित किए। उनके लेखन में नारीवाद केवल एक आंदोलन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति का प्रतीक बनता है। आज भी उनका साहित्य और विचार भारतीय समाज में स्त्री स्वतंत्रता और अधिकारों के संदर्भ में प्रासंगिक हैं। इस शोध में महादेवी वर्मा के साहित्यिक दृष्टिकोण और उनके नारीवाद के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया जाएगा।

महादेवी वर्मा का नारीवादी दृष्टिकोण

महादेवी वर्मा का नारीवादी दृष्टिकोण उनके समग्र साहित्य में गहराई से प्रतिबिंबित होता है। उनका नारीवाद भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और पारंपरिक संदर्भों में नारी अस्मिता और स्वतंत्रता की अवधारणा पर आधारित है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व, उसकी पहचान और स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाई। महादेवी का नारीवादी दृष्टिकोण पश्चिमी नारीवाद से भिन्न है, क्योंकि उन्होंने भारतीय नारी के संदर्भ में उसकी सामाजिक स्थिति, परिवार में उसकी भूमिका और उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को केंद्र में रखा।

महादेवी वर्मा के काव्य और गद्य दोनों में नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। उनकी प्रसिद्ध कृति **"श्रृंखला की कड़ियां"** में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया गया है। इस कृति में उन्होंने नारी

की दासता, उसकी विवशता और पारंपरिक रूढ़ियों के जाल में फंसे उसके जीवन का सजीव वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि नारी के अधिकार केवल कानूनों के आधार पर नहीं, बल्कि समाज की सोच में बदलाव से संभव हैं।

महादेवी ने अपने लेखन में नारी को आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बनने के लिए प्रेरित किया। उनकी आत्मकथात्मक कृति **"स्मृति की रेखाएं"** में स्त्री की स्वतंत्रता के प्रति उनकी सोच स्पष्ट होती है। इस रचना में उन्होंने अपने जीवन की घटनाओं के माध्यम से स्त्री की संघर्षशीलता और उसकी आंतरिक शक्ति को उजागर किया है। महादेवी ने नारी को केवल परिवार और समाज की जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे अपनी पहचान बनाने और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा दी।

महादेवी वर्मा के काव्य में स्त्री और प्रकृति का गहरा संबंध दिखता है। उनकी काव्य रचना **"यामा"** में नारी के भीतर छिपे दर्द, उसकी संवेदनशीलता और उसकी स्वतंत्रता की अभिलाषा को बेहद गहनता से चित्रित किया गया है। "पिंजरे का पक्षी" कविता में उन्होंने स्त्री को पिंजरे में बंद पक्षी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो स्वतंत्रता के लिए तरसता है। यह प्रतीकात्मक चित्रण नारी के सामाजिक बंधनों और उसकी स्वतंत्रता की आकांक्षा को दर्शाता है।

महादेवी ने नारी को केवल परिवार की देखभाल करने वाली भूमिका तक सीमित नहीं किया, बल्कि उसे समाज के निर्माण में एक सक्रिय भागीदार के रूप में देखा। **"अतीत के चलचित्र"** और **"नीरजा"** जैसी रचनाओं में उन्होंने स्त्रियों के अनुभवों और उनकी छिपी हुई शक्ति को उजागर किया। उन्होंने कहा कि स्त्री केवल मातृत्व और त्याग की मूर्ति नहीं है, बल्कि वह एक सशक्त व्यक्तित्व है, जिसे समाज में अपनी पहचान बनाने का अधिकार है।

महादेवी वर्मा का नारीवाद केवल स्त्री स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री के अंदर आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगाने का प्रयास करता है। उन्होंने नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने और समाज में अपनी भूमिका पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। उनका नारीवादी दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह केवल स्त्री मुक्ति की बात नहीं करता, बल्कि समाज में स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समानता और सम्मान की बात करता है।

महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य में नारी के संघर्ष, उसकी पहचान और उसकी स्वतंत्रता के लिए जो आवाज उठाई, वह न केवल छायावादी युग के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि आज भी स्त्री अधिकारों और सामाजिक न्याय के संदर्भ में प्रेरणा का स्रोत है। उनकी रचनाएं नारीवाद की भारतीय दृष्टि को गहराई से समझने का मार्ग प्रदान करती हैं।

महादेवी वर्मा की रचनाओं में स्त्री अस्मिता

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की प्रमुख कवयित्री और गद्य लेखिका थीं, जिनकी रचनाओं में स्त्री अस्मिता का स्वर प्रमुखता से उभरता है। उनकी रचनाओं ने स्त्री को न केवल समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उसकी आंतरिक शक्ति और आत्मचेतना को भी मुखर रूप दिया। महादेवी वर्मा का साहित्य नारी को दया और त्याग की मूर्ति के पार, एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में देखता है।

स्त्री अस्मिता से तात्पर्य नारी के अस्तित्व, उसकी पहचान, अधिकारों और स्वतंत्रता से है। महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री की पारंपरिक छवि को चुनौती दी और उसे समाज में एक समान और सशक्त भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। उनकी रचनाओं में स्त्री के संघर्ष, पीड़ा, संवेदनशीलता और उसकी आत्मनिर्भरता की अभिव्यक्ति गहराई से दिखाई देती है।

महादेवी वर्मा के काव्य में स्त्री अस्मिता का सबसे सशक्त चित्रण मिलता है। उनकी कविता **"पिंजरे का पंछी"** स्त्री की स्वतंत्रता की आकांक्षा का प्रतीक है। इस कविता में उन्होंने समाज के बंधनों में जकड़ी स्त्री को पिंजरे में बंद पक्षी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अपनी उड़ान भरने के लिए तरसता है। उनकी कृति **"यामा"** में भी स्त्री के आत्मसंघर्ष और उसकी आंतरिक पीड़ा को उजागर किया गया है।

महादेवी की कविताओं में स्त्री की संवेदनशीलता और संघर्ष के साथ-साथ उसकी शक्ति का भी चित्रण है। उनके काव्य में नारी केवल एक भावुक प्राणी नहीं, बल्कि एक सशक्त आत्मा है, जो अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लड़ने को तत्पर है।

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य, विशेषकर **"श्रृंखला की कड़ियां"**, स्त्री अस्मिता का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस कृति में उन्होंने नारी के अस्तित्व और उसकी स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाया है। महादेवी ने नारी को केवल परिवार और समाज की सेवा में समर्पित प्राणी के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में चित्रित किया है।

"स्मृति की रेखाएं" में महादेवी ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से स्त्री की सामाजिक स्थिति और उसके संघर्ष को प्रस्तुत किया है। इस कृति में उन्होंने स्त्रियों के जीवन की उन घटनाओं का वर्णन किया है, जो उनकी अस्मिता और स्वतंत्रता को सीमित करती हैं।

महादेवी वर्मा ने शिक्षा को स्त्री अस्मिता का महत्वपूर्ण माध्यम माना। उन्होंने अपने साहित्य में बार-बार इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा ही वह साधन है, जो स्त्री को आत्मनिर्भर बना सकता है। **"अतीत के चलचित्र"** और **"नीरजा"** जैसी रचनाओं में शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया गया है।

महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य में नारी के प्रति समाज की रूढ़िवादी सोच को चुनौती दी। उन्होंने स्त्री को केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित रखने का विरोध किया और उसे अपने अधिकारों और पहचान के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया।

स्त्री स्वतंत्रता की खोज

स्त्री स्वतंत्रता की खोज महादेवी वर्मा के साहित्य का केंद्रीय विषय है, जो उनके लेखन में गहराई और संवेदनशीलता के साथ व्यक्त हुआ है। भारतीय समाज में स्त्री को लंबे समय से एक सीमित और परंपरागत भूमिका में बांधा गया था, जहां वह त्याग, सहनशीलता और परिवार के प्रति समर्पण की मूर्ति बनकर रह गई थी। महादेवी वर्मा ने इस स्थिति को चुनौती दी और अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री की स्वतंत्रता की वकालत की। उनका मानना था कि स्त्री केवल पुरुष के अधीन या परिवार की सेवा में बंधी हुई नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसे अपनी पहचान और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए। उन्होंने अपनी कृतियों, जैसे **"श्रृंखला की कड़ियां"**, **"स्मृति की रेखाएं"** और **"अतीत के चलचित्र"**, में स्त्री की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया और उसे आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। महादेवी ने स्त्री की स्वतंत्रता के लिए शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण साधन माना, क्योंकि शिक्षा से ही वह अपने भीतर छिपी क्षमता और आत्मविश्वास को पहचान सकती है।

महादेवी वर्मा ने यह भी स्पष्ट किया कि स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ केवल सामाजिक बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि यह उसकी आंतरिक चेतना, मानसिक स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता को प्राप्त करना है। उनकी कविता **"पिंजरे का पंछी"** में स्त्री के बंधनों और उसकी मुक्ति की आकांक्षा को प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। यह कविता

स्त्री के उस संघर्ष को दर्शाती है, जिसमें वह अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयास करती है, लेकिन सामाजिक और पारिवारिक ढांचे उसे बार-बार बाधित करते हैं। महादेवी ने अपने लेखन में न केवल स्त्री के प्रति समाज के रूढ़िवादी दृष्टिकोण की आलोचना की, बल्कि यह भी कहा कि स्त्री को स्वयं अपनी शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है।

उनकी कृति **"यामा"** में भी स्वतंत्रता की यह आकांक्षा गहराई से व्यक्त हुई है, जहां उन्होंने स्त्री के भीतर छिपी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति का चित्रण किया है। महादेवी वर्मा का नारीवाद भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक संदर्भों में गहराई से निहित है। उन्होंने नारी को केवल पुरुषों के बराबर लाने की बात नहीं की, बल्कि उसे अपनी विशिष्टता को पहचानने और एक स्वतंत्र इकाई के रूप में समाज में स्थापित होने का संदेश दिया। उनकी दृष्टि में स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ केवल बाहरी बाधाओं को तोड़ना नहीं है, बल्कि आत्मचेतना, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता को प्राप्त करना भी है। महादेवी वर्मा की यह खोज केवल साहित्य तक सीमित नहीं है; यह एक सामाजिक आंदोलन की तरह है, जो आज भी प्रासंगिक है। उनका साहित्य स्त्री के संघर्ष और स्वतंत्रता की दिशा में प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

महादेवी वर्मा का नारीवाद और समकालीन प्रासंगिकता

महादेवी वर्मा का नारीवाद भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और पारंपरिक संदर्भों में गहराई से निहित है। उनका नारीवादी दृष्टिकोण भारतीय स्त्री के यथार्थ को समझते हुए उसे आत्मनिर्भर और आत्मचेतन बनाने का मार्ग दिखाता है। महादेवी वर्मा ने नारी को केवल गृहलक्ष्मी, मातृत्व या त्याग की मूर्ति तक सीमित न रखते हुए उसे एक सशक्त, स्वाभिमानी और स्वतंत्र इकाई के रूप में चित्रित किया। उनके नारीवाद में पश्चिमी नारीवाद की आक्रामकता नहीं है, बल्कि एक संतुलन है, जो भारतीय समाज की जरूरतों और स्त्री की यथार्थ स्थिति को ध्यान में रखता है।

महादेवी वर्मा की कृति **"श्रृंखला की कड़ियां"** नारी की सामाजिक स्थिति, उसके अधिकारों और उसकी स्वतंत्रता की वकालत करती है। इसमें उन्होंने स्त्रियों को परंपराओं और रूढ़ियों के जाल से मुक्त होने और अपनी अस्मिता को पहचानने का संदेश दिया। उनका मानना था कि नारी को केवल पुरुष की छाया या उसकी सेवा में समर्पित प्राणी मानना, उसकी क्षमताओं का अपमान है। उन्होंने यह भी कहा कि स्त्री को अपनी स्वतंत्रता के लिए स्वयं प्रयास करना होगा, क्योंकि समाज केवल उसी का सम्मान करता है, जो स्वयं अपनी स्थिति का निर्धारण करता है।

महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता की खोज केवल बाहरी बाधाओं को समाप्त करने तक सीमित नहीं है। उन्होंने नारी की आंतरिक चेतना, उसकी मानसिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को अधिक महत्व दिया। उनकी रचनाओं, जैसे **"स्मृति की रेखाएं"** और **"अतीत के चलचित्र"**, में उन्होंने स्त्री के भीतर की शक्ति, संघर्ष और उसकी आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

महादेवी वर्मा का नारीवाद आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि उनके विचार स्त्री अधिकारों, समानता और आत्मनिर्भरता की बात करते हैं, जो आज के समाज में भी संघर्ष के विषय हैं। आधुनिक समाज में, जहां महिलाओं को शिक्षा, कार्यक्षेत्र और समाज में अधिक अवसर मिल रहे हैं, वहीं वे यौन हिंसा, भेदभाव और लैंगिक असमानता जैसी समस्याओं का सामना कर रही हैं। महादेवी के विचार स्त्री को इन चुनौतियों से लड़ने की प्रेरणा देते हैं।

महादेवी वर्मा का नारीवाद विशेष रूप से इस दृष्टिकोण से प्रासंगिक है कि यह स्त्री और पुरुष के बीच संतुलित संबंधों की बात करता है। उन्होंने नारीवाद को केवल पुरुष-विरोधी दृष्टिकोण के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे

समाज में समानता और सहयोग की अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया। आज, जब नारीवाद को लेकर कई तरह की भ्रांतियां और धारणाएं हैं, महादेवी वर्मा का नारीवाद सही दिशा प्रदान कर सकता है।

महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य में शिक्षा को स्त्री सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण साधन बताया। यह विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है, जिससे स्त्री अपनी पहचान बना सकती है। उनकी रचनाओं में स्त्री के संघर्ष और उसकी स्वतंत्रता की आकांक्षा आज की स्त्रियों को प्रेरित करती है।

महादेवी वर्मा का नारीवाद स्त्री के भीतर आत्मसम्मान, आत्मचेतना और आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित करता है। उनका साहित्य यह संदेश देता है कि स्त्री की स्वतंत्रता केवल कानूनों और नीतियों से नहीं, बल्कि उसकी मानसिक और सामाजिक स्वतंत्रता से प्राप्त होगी। समकालीन भारत में, जहां स्त्री अधिकारों को लेकर नई परिभाषाएं और आंदोलन उभर रहे हैं, महादेवी वर्मा के विचार स्त्री सशक्तिकरण के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं।

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की उन युगपुरुषों में से हैं, जिन्होंने न केवल साहित्य के छायावादी युग को अपनी मौलिकता से समृद्ध किया, बल्कि स्त्री अस्मिता, स्वतंत्रता और नारीवाद की भारतीय अवधारणा को एक नई दिशा दी। उनकी रचनाओं में स्त्री की आंतरिक संवेदनाओं, सामाजिक संघर्षों और स्वतंत्रता की तीव्र आकांक्षा का गहन चित्रण मिलता है। महादेवी वर्मा ने नारी को परंपरागत बंधनों से मुक्त होने और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया। उनका नारीवाद केवल पश्चिमी सिद्धांतों का अनुकरण नहीं करता, बल्कि यह भारतीय समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में गहराई से निहित है।

महादेवी वर्मा का साहित्य शिक्षा, आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान को स्त्री स्वतंत्रता के लिए आवश्यक तत्व मानता है। उनकी कविताओं और गद्य रचनाओं में नारी के भीतर छिपी शक्ति और आत्मचेतना को जागृत करने का प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है। **"पिंजरे का पक्षी"** से लेकर **"श्रृंखला की कड़ियां"** और **"स्मृति की रेखाएं"** तक, उनकी हर रचना स्त्री के संघर्ष और उसकी स्वतंत्रता की दिशा में एक सशक्त संदेश देती है।

हालांकि, उनके साहित्य को छायावाद की सीमाओं और आदर्शवादी दृष्टिकोण के लिए आलोचना का भी सामना करना पड़ा, फिर भी उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं। समकालीन समाज में, जहां स्त्री स्वतंत्रता और समानता की बातें अधिक मुखर हो रही हैं, महादेवी वर्मा का साहित्य इस आंदोलन को एक सांस्कृतिक और बौद्धिक आधार प्रदान करता है।

महादेवी वर्मा का साहित्य न केवल नारी सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष के बीच संतुलित संबंधों की भी बात करता है। उनकी रचनाएं स्त्री के आत्मसम्मान और गरिमा को स्थापित करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके विचार और दृष्टिकोण यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री स्वतंत्रता केवल बाहरी बाधाओं को समाप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मचेतना, मानसिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की प्राप्ति का भी माध्यम है।

संदर्भग्रंथ सूची:

1. वर्मा, महादेवी। (1935)। **यामा**। प्रयाग: भारतीय ज्ञानपीठ।
2. वर्मा, महादेवी। (1941)। **श्रृंखला की कड़ियां**। इलाहाबाद: किताब महल।
3. वर्मा, महादेवी। (1942)। **स्मृति की रेखाएं**। इलाहाबाद: साहित्य भवन।

4. वर्मा, महादेवी। (1947)। **अतीत के चित्र**। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
5. वर्मा, महादेवी। (1950)। **नीरजा**। इलाहाबाद: भारतीय ज्ञानपीठ।
6. वर्मा, महादेवी। (1961)। **संधिनी**। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
7. शर्मा, बृजकिशोर। (1981)। **महादेवी वर्मा: साहित्य और जीवन**। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. गोयल, बलदेव। (1995)। **महादेवी वर्मा: एक अध्ययन**। नई दिल्ली: किताब महल।
9. सिंह, रामकुमार। (2005)। **महादेवी वर्मा और हिंदी कविता**। वाराणसी: विश्व विद्यालय प्रकाशन।
10. श्रीवास्तव, सुधा। (2008)। **महादेवी वर्मा: नारी चेतना के संदर्भ में**। नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।